



KVS

Principal & Vice Principal

Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS)

भाग - 3

INDEX

| S.N. | Content | P.N. |
|--|---|------|
| इकाई - III शिक्षण-अधिगम की योजना और संगठन | | |
| 1. | शिक्षण-अधिगम योजना का अर्थ, दायरा और दर्शन | 1 |
| 2. | सिलेबस: अर्थ, स्कोप, कंपोनेंट्स और टाइप्स | 6 |
| 3. | पाठ्यक्रम: अर्थ, उद्देश्य, संरचना और निर्धारक | 9 |
| 4. | ओवरट करिकुलम: मतलब, कंस्ट्रक्शन और इम्प्लीमेंटेशन | 14 |
| 5. | छिपा हुआ पाठ्यक्रम: प्रकृति, विशेषताएँ, स्रोत, प्रभाव | 19 |
| 6. | स्कूल टाइम-टेबल: कॉन्सेप्ट और प्रिंसिपल | 23 |
| 7. | स्कूल टाइम-टेबल का निर्माण (स्टेप-वाइज तरीका) | 29 |
| 8. | बुनियादी संख्यात्मकता: अवधारणा, घटक और रूपरेखा | 37 |
| 9. | प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ECCE): अवधारणा, उद्देश्य, सिद्धांत, दृष्टिकोण | 42 |
| 10. | योग्यता-आधारित शिक्षा (CBE): नींव और दर्शन | 48 |
| 11. | काबिलियत पर आधारित लेसन प्लानिंग: कॉन्सेप्ट, ज़रूरी बातें, स्ट्रक्चर, स्कूल लेवल पर लागू करना | 53 |
| 12. | काबिलियत पर आधारित लेसन प्लान के फॉर्मेट, टेम्पलेट, उदाहरण और सीखने के नतीजों की मैपिंग | 59 |
| 13. | काबिलियत पर आधारित मूल्यांकन (CBA): कॉन्सेप्ट, सिद्धांत, टूल्स, सबूत और स्कूल इम्प्लीमेंटेशन फ्रेमवर्क | 64 |
| 14. | निर्देशात्मक सामग्री और संसाधन | 70 |
| 15. | शिक्षण अधिगम में डिजिटल प्रौद्योगिकी | 77 |
| 16. | क्लासरूम ऑब्ज़र्वेशन, फ़ीडबैक और फ़ॉलो-अप: कॉन्सेप्ट, इंडिकेटर, टूल्स, प्रोटोकॉल और प्रिंसिपल की एकेडमिक लीडरशिप | 84 |
| 17. | कंस्ट्रक्टिविस्ट टीचिंग के तरीके के तौर पर रिफ्लेक्शन और डायलॉग: कॉन्सेप्ट, थ्योरी, फ्रेमवर्क, टेक्नीक और स्कूल इम्प्लीमेंटेशन | 90 |
| 18. | योग्यता-आधारित मूल्यांकन (CBA): अवधारणा और सिद्धांत | 103 |
| 19. | स्कूलों में रिसोर्स मैनेजमेंट (डीप, इन-डेपथ, एक्सपर्ट-लेवल नोट्स) | 120 |
| 20. | टीचिंग-लर्निंग में डिजिटल टेक्नोलॉजी: कॉन्सेप्ट और ट्रेंड्स (डीप, एक्सक्लूसिव, नॉन-रिपीटिटिव नोट्स) | 126 |
| 21. | केवीएस स्कूल लीडरशिप के लिए डिजिटल टूल्स (दीक्षा, एनडीएआर, स्वयं, ई-पाठशाला, असेसमेंट और मॉनिटरिंग प्लेटफॉर्म, डिजिटल सेफ्टी और रेगुलेशन) | 133 |

| | | |
|-----|---|-----|
| 22. | क्लासरूम ऑब्ज़र्वेशन: कॉन्सेप्ट, मकसद और टाइप (डीप, नॉन-रिपीटिटिव, पूरी तरह भरोसेमंद नोट्स) | 139 |
| 23. | कक्षा अवलोकन: संकेतक और प्रोटोकॉल | 146 |
| 24. | फीडबैक: प्रिंसिपल्स, स्ट्रेटेजी और मॉडल्स (डीप, एक्सपेंडेड, पूरी तरह से डिपेंडेबल नोट्स) | 154 |
| 25. | फ़ॉलो-अप: मॉनिटरिंग, मेंटरिंग और सपोर्टिव सुपरविज़न (गहरे, बड़े, पूरी तरह भरोसेमंद नोट्स) | 160 |
| 26. | चिंतन, संवाद और शिक्षक आत्म-मूल्यांकन | 166 |
| 27. | एकीकृत रचनावादी शिक्षण ढांचा | 173 |

शिक्षण-अधिगम योजना का अर्थ, दायरा और दर्शन

1. टीचिंग-लर्निंग में प्लानिंग का मतलब

टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग एक सोची-समझी, सिस्टमैटिक, भविष्य को ध्यान में रखकर की जाने वाली दिमागी एक्टिविटी है जो यह तय करती है कि स्कूल सिस्टम के अंदर सीखने के अनुभवों को कैसे डिज़ाइन, ऑर्गनाइज़, डिलीवर, असेस और बेहतर बनाया जाएगा। एक स्कूल लीडर के लिए, प्लानिंग सिर्फ एक पढ़ाने का काम ही नहीं है, बल्कि एक एडमिनिस्ट्रेटिव काम भी है जो करिकुलम के लक्ष्यों, सिखाने के तरीकों, टीचर की तैयारी, सीखने वालों की ज़रूरतों, इंफ्रास्ट्रक्चरल रिसोर्स और इंस्टीट्यूशनल उम्मीदों के बीच तालमेल पक्का करता है।

एजुकेशनल थ्योरी में, प्लानिंग एक पहले से पता चलने वाला प्रोसेस है जो अनिश्चितता को कम करता है, मकसद को साफ़ करता है, सिखाने की स्ट्रेटेजी को सीखने के नतीजों के साथ जोड़ता है, और एजुकेशनल लक्ष्यों को पाने की संभावना को बढ़ाता है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि सीखना सिर्फ अपने आप नहीं होता; इसके लिए सोच-समझकर तैयारी, रिसोर्स बांटने और अनुभवों को मकसद के साथ क्रम में लगाने की ज़रूरत होती है।

टीचिंग-लर्निंग में प्लानिंग में शामिल हैं:

- यह तय करना कि सीखने वालों को क्या सीखना चाहिए (लक्ष्य, योग्यता, सीखने के नतीजे)
 - यह तय करना कि उन्हें कैसे सीखना चाहिए (तरीके, स्ट्रेटेजी, एक्टिविटी, डिजिटल टूल)
 - यह तय करना कि सीखने का मूल्यांकन कैसे किया जाएगा (मूल्यांकन उपकरण, सबूत, रूब्रिक्स)
 - यह तय करना कि टीचिंग-लर्निंग प्रोसेस को कैसे मॉनिटर और बेहतर बनाया जाएगा (ऑब्ज़र्वेशन, फीडबैक, सुपरविज़न, रिफ्लेक्शन)
- नेशनल पॉलिसी, खासकर NEP 2020, NIPUN भारत, NCF 2023, CBSE लर्निंग आउटकम और कॉम्पिटेन्सी-बेस्ड एजुकेशन फ्रेमवर्क से जोड़ना ज़रूरी है।**

2. टीचिंग-लर्निंग में प्लानिंग की ज़रूरत और महत्व

a) करिकुलम और कॉम्पिटेन्सी के साथ अलाइनमेंट पक्का करता है

प्लानिंग यह पक्का करती है कि क्लासरूम की एक्टिविटीज़ KVS/CBSE द्वारा तय बड़े करिकुलर उम्मीदों, कॉम्पिटेन्सी टारगेट और एकेडमिक स्टैंडर्ड के हिसाब से रहें। प्लानिंग के बिना, पढ़ाई में बिखराव, कंटेंट ओवरलोड या ऊपरी कवरेज का खतरा रहता है।

b) सिस्टमैटिक और स्ट्रक्चर्ड लर्निंग को बढ़ावा देता है

स्टूडेंट्स सबसे अच्छा तब सीखते हैं जब इंस्ट्रक्शन एक कोहेरेंट स्ट्रक्चर को फॉलो करता है। प्लानिंग आसान कॉन्सेप्ट से ज़्यादा कॉम्प्लेक्स कॉम्पिटेन्सी तक प्रोग्रेसिव डेवलपमेंट पक्का करने के लिए सीकेंस, स्कैफोल्डिंग और पेसिंग देती है।

c) विभेदित निर्देश को सुगम बनाता है

एक अच्छी तरह से तैयार टीचर सीखने वालों के अंतरों पर विचार करता है - खास ज़रूरतें, रफ़्तार में अंतर, भाषा से जुड़ी चुनौतियाँ, सामाजिक-सांस्कृतिक बैकग्राउंड - और सभी के लिए सीखने के रास्ते खोलने के लिए कई रास्ते बनाता है।

d) स्कूल के संसाधनों का बेहतर इस्तेमाल

TLM से लेकर डिजिटल टूल्स तक, प्लानिंग से रिसोर्स को सही तरीके से चुनने और रखने में मदद मिलती है। प्रिंसिपल लैब, लाइब्रेरी शेड्यूल, ICT लैब, स्पोर्ट्स फैसिलिटी और टीचर के वर्कलोड को कोऑर्डिनेट करने के लिए प्लानिंग का इस्तेमाल करते हैं।

e) जवाबदेही बढ़ाता है

प्लान का डॉक्यूमेंटेशन (एनुअल प्लान, मंथली प्लान, यूनिट प्लान, लेसन प्लान, असेसमेंट प्लान) प्रोग्रेस को मॉनिटर करने और फीडबैक देने के लिए एक ट्रांसपैरेंट फ्रेम बनाता है।

f) स्कूल सुधार योजना (SIP) को सपोर्ट करता है

पेडागॉजिकल प्लानिंग स्कूल डेवलपमेंट प्लान का एक हिस्सा बन जाती है। बेहतर टीचिंग-लर्निंग सीधे तौर पर एकेडमिक परफॉर्मेंस, FLN इंडिकेटर्स, अटेंडेंस और होलिस्टिक डेवलपमेंट पर असर डालती है।

3. स्कूल में पढ़ाने-सीखने में प्लानिंग के लेवल

1. लॉन्ग-टर्म प्लानिंग (मैक्रो लेवल)

स्कूल लीडरशिप और एकेडमिक कोऑर्डिनेटर हर साल या टर्म के हिसाब से इसे करते हैं।

- वार्षिक पाठ्यचर्या योजना (एसीपी)

- स्कूल शैक्षणिक कैलेंडर
- दक्षताओं का सत्रवार वितरण
- स्कूल-व्यापी शैक्षणिक लक्ष्य निर्धारित करना
- प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण की योजना बनाना

2. मध्यम अवधि की योजना

महीने के हिसाब से या यूनिट के हिसाब से किया जाता है।

- मासिक योजनाकार
- इकाई योजनाएँ
- समय-सारणी समायोजन
- संसाधन शेड्यूलिंग
- शिक्षकों की सहयोगात्मक योजना बैठकें

3. शॉर्ट-टर्म प्लानिंग (माइक्रो लेवल)

असल क्लासरूम टीचिंग से पहले टीचर्स द्वारा किया गया।

- पाठ योजनाएं
 - टास्क शीट और वर्कशीट
 - दैनिक कक्षा सामग्री
 - मूल्यांकन गतिविधियाँ
- KVS प्रिंसिपल को यह पता होना चाहिए कि तीनों लेवल स्कूल के एकेडमिक इकोसिस्टम में कैसे जुड़ते हैं।

4. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग के कंपोनेंट्स

i. लक्ष्य और योग्यताएँ

प्लानिंग की शुरुआत CBSE द्वारा बताए गए लर्निंग आउटकम और कॉम्पिटेंसी की पहचान करके होती है। कॉम्पिटेंसी असल ज़िंदगी में इस्तेमाल के लिए ज़रूरी इंटीग्रेटेड नॉलेज-स्किल्स-एटीट्यूड को दिखाती हैं।

ii. सामग्री चयन और अनुक्रमण

टीचर नतीजों के हिसाब से काम का कंटेंट चुनते हैं और उसे लॉजिकली अरेंज करते हैं, जिससे बेसिक कॉन्सेप्ट से लेकर एडवांस्ड एप्लीकेशन तक कॉग्निटिव प्रोग्रेस पक्का हो सके।

iii. विधियाँ और शिक्षणशास्त्र

पेडागॉजी को सीखने वालों की ज़रूरतों के आधार पर चुना जाता है:

- रचनावादी, गतिविधि-आधारित
- परियोजना-आधारित, अनुभववात्मक
- सहयोगात्मक शिक्षण
- आईसीटी-एकीकृत शिक्षा
- पूछताछ-आधारित विधियाँ

iv. सीखने की गतिविधियाँ और अनुभव

एक्टिविटीज़ में एंगेजमेंट, एक्सप्लोरेशन, इन्वेस्टिगेशन, प्रॉब्लम-सॉल्विंग और क्रिएटिव एक्सप्रेसन का मौका मिलना चाहिए।

v. संसाधन और सामग्री

डिजिटल और फिजिकल दोनों तरह के रिसोर्स को इंस्ट्रक्शन के साथ इंटीग्रेट किया जाना चाहिए - TLMs, चार्ट, लैब इक्विपमेंट, मैनिपुलेटिव्स, टैबलेट, लर्निंग ऐप्स, OER, DIKSHA कंटेंट, वीडियो।

vi. मूल्यांकन और साक्ष्य

असेसमेंट प्लानिंग में यह तय करना शामिल है कि सीखने के क्या सबूत इकट्ठा किए जाएंगे - परफॉर्मेंस टास्क, रूब्रिक्स, ओरल रिस्पॉन्स, पोर्टफोलियो, क्विज़, प्रोजेक्ट्स।

vii. विभेदन

टीचर CWSN समेत अलग-अलग तरह के स्टूडेंट्स के लिए इंस्ट्रक्शन और असेसमेंट में अलग-अलग तरह के प्लान बनाते हैं।

viii. समय प्रबंधन और कक्षा संगठन

समय का सही इस्तेमाल सीखने की क्वालिटी पर असर डालता है। प्लानिंग में एक्टिविटी चुनना, बदलाव, ग्रुप का साइज़, बैठने की व्यवस्था और क्लासरूम रूटीन शामिल हैं।

5. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग के थ्योरेटिकल बेसिस

क) व्यवहारवादी परिप्रेक्ष्य

बिहेवियरिस्ट स्कूल (स्किनर, थॉर्नडाइक) ऐसे नतीजों पर ज़ोर देता है जिन्हें देखा जा सके। टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग को स्टिमुलस-रिस्पॉन्स इवेंट्स के एक सीकेंस के तौर पर देखा जाता है जिसमें रीइन्फोर्समेंट होता है। लेसन प्लान्स में लीनियर स्ट्रक्चर होते हैं जिनमें साफ़, मेज़र किए जा सकने वाले मकसद और प्रैक्टिस ड्रिल्स होती हैं।

b) संज्ञानात्मक दृष्टिकोण

प्लानिंग में प्रोसेस जैसे ध्यान, समझ, याददाश्त और इन्फॉर्मेशन प्रोसेसिंग पर फोकस करती है। टीचर कंटेंट को काम के हिस्सों में ऑर्गनाइज़ करते हैं, पहले से मिली जानकारी को एक्टिवेट करते हैं, और सीखने को आसान बनाते हैं।

c) रचनावादी दृष्टिकोण

कंस्ट्रक्टिविज़्म (पियागेट, वायगोत्स्की, ब्रूनर) सीखने को एक एक्टिव, मतलब बनाने वाली प्रक्रिया के रूप में देखता है। प्लानिंग इस बात पर ज़ोर देती है:

- सहयोगात्मक शिक्षण
- अन्वेषण
- प्रतिबिंब
- वार्ता
- समस्या को सुलझाना
- ZPD (निकटतम विकास क्षेत्र)
- मचान

d) मानवतावादी दृष्टिकोण

मैस्लो, रोजर्स और दूसरे ह्यूमनिस्टिक थ्योरिस्ट, इमोशनल सेफ्टी, मोटिवेशन, सेल्फ-डायरेक्टेड लर्निंग और ऑटोनॉमी पर ज़ोर देते हुए लर्नर-सेंटरड प्लानिंग पर ज़ोर देते हैं।

ई) योग्यता-आधारित शिक्षा (सीबीई) परिप्रेक्ष्य

प्लानिंग साफ़ तौर पर बताई गई काबिलियत में महारत हासिल करने के आस-पास घूमती है। असेसमेंट नतीजों के हिसाब से होता है और जानकारी याद करने के बजाय परफॉर्मेंस का सबूत देता है।

KVS प्रिंसिपल एग्जाम के लिए, NEP 2020 के अनुसार कॉम्पिटेन्सी-बेस्ड टीचिंग प्लानिंग सबसे ज़रूरी फ्रेमवर्क है।

6. प्लानिंग को गाइड करने वाले पेडागोगिकल प्रिंसिपल्स

1. बाल-केंद्रितता का सिद्धांत

प्लानिंग सीखने वालों की ज़रूरतों, रुचियों, तैयारी, रफ़्तार और अलग-अलग तरह के लोगों के आस-पास होनी चाहिए।

2. एकीकरण का सिद्धांत

सब्जेक्ट्स को अलग-अलग नहीं पढ़ाया जाना चाहिए; क्रॉस-करिकुलर लिंकेज गहरी लर्निंग को मज़बूत करते हैं।

3. प्रासंगिकता का सिद्धांत

प्लानिंग में सीखने को असल जिंदगी के हालात, 21वीं सदी के स्किल्स और भविष्य की करियर की ज़रूरतों से जोड़ना चाहिए।

4. लचीलेपन का सिद्धांत

टीचर्स को क्लासरूम के माहौल के आधार पर प्लान बदलने में सक्षम होना चाहिए।

5. मूल्यांकन-संरक्षण का सिद्धांत

सही काबिलियत मापने के लिए, सीखने की एक्टिविटीज़ के साथ-साथ असेसमेंट की भी प्लानिंग करनी चाहिए।

6. समावेशिता का सिद्धांत

CWSN प्लानिंग में अकोमोडेशन, रिसोर्स सपोर्ट, साथियों का सहयोग और UDL (यूनिवर्सल डिज़ाइन फॉर लर्निंग) शामिल हैं।

7. संगति का सिद्धांत

एक जैसे रूटीन, उम्मीदें और क्रम स्ट्रुक्चर्स को सीखने की आदतें अपनाने में मदद करते हैं।

7. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग को प्रभावित करने वाले फैक्टर्स

क) शिक्षार्थी-संबंधित कारक

- आयु, विकासात्मक अवस्था
- सीखने की शैलियाँ
- संज्ञानात्मक तत्परता
- सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि
- भाषा प्रवीणता
- विशेष ज़रूरतों

ख) शिक्षक-संबंधित कारक

- शैक्षणिक ज्ञान
- अनुभव
- प्रौद्योगिकी का उपयोग
- मूल्यांकन साक्षरता
- कक्षा प्रबंधन कौशल

ग) स्कूल-संबंधी कारक

- आधारभूत संरचना
- टीएलएम की उपलब्धता
- आईसीटी पहुंच
- सहायक पर्यवेक्षण
- समय-सारणी संरचना

d) समुदाय और नीतिगत कारक

- माता-पिता की अपेक्षाएँ
- एनईपी 2020 दिशानिर्देश
- पाठ्यचर्या सुधारों
- सीबीएसई योग्यता-आधारित मूल्यांकन आवश्यकताएँ

8. कंस्ट्रक्टिविस्ट टीचिंग-लर्निंग के लिए प्लानिंग

एक कंस्ट्रक्टिविस्ट प्लान इस बात पर ज़ोर देता है:

i) सक्रिय भागीदारी के रूप में सीखना

सीखने वाले लोग याद करके नहीं, बल्कि जुड़कर मतलब बनाते हैं।

ii) अनुभवात्मक शिक्षा

हैंड्स-ऑन टास्क, एक्सपेरिमेंट, ग्रुप वर्क, प्रोजेक्ट्स, ऑब्ज़र्वेशन।

iii) सार्थक संदर्भ

असल ज़िंदगी के हालात, फ़्रील्ड के अनुभव, लोकल हालात प्लानिंग को बेहतर बनाते हैं।

iv) संवाद और अंतःक्रिया

बातचीत, सवाल-जवाब, साथियों से बातचीत, सोच-विचार वाली चर्चाएँ इसकी रीढ़ हैं।

v) परावर्तन

सीखने वाले अपने सीखने के प्रोसेस को इवैल्यूएट करते हैं।

vi) शिक्षक एक सुविधाकर्ता के रूप में

टीचर अनुभव डिज़ाइन करते हैं, जांच में गाइड करते हैं, और सीखने वालों को सपोर्ट करते हैं।

रचनात्मकता के अंतर्गत नियोजन "शिक्षण सामग्री" से "शिक्षण अनुभवों की रूपरेखा तैयार करने" की ओर स्थानांतरित हो जाता है।

9. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग में डॉक्यूमेंटेशन (KVS/CBSE फ़्रेमवर्क)

1. वार्षिक शैक्षणिक योजना

प्रिंसिपल + HMs + PGTs + TGTs द्वारा शेयर किया गया।

2. टर्म-वाइज प्लानर

हर टर्म के लिए कॉम्पिटेंसी का ब्रेकडाउन।

3. मासिक प्लानर

कंटेंट, एक्टिविटीज़, असेसमेंट का इंटीग्रेशन।

4. यूनिट प्लान

नतीजों और एक्टिविटीज़ के साथ स्किल-बेस्ड प्लानिंग।

5. पाठ योजना

रोज़ाना क्लासरूम ट्रांज़ैक्शन प्लान।

6. सुधारात्मक और समृद्ध योजना

अलग-अलग स्टूडेंट की काबिलियत के लिए अलग-अलग प्लानिंग।

7. मूल्यांकन योजना

इसमें फॉर्मेटिव, समेटिव, कॉम्पिटेंसी-बेस्ड असेसमेंट शामिल हैं।

8. शिक्षक व्यावसायिक विकास योजना

ऑब्ज़र्वेशन फ़ीडबैक के आधार पर।

डॉक्यूमेंटेशन इंटरनल एकेडमिक ऑडिट के लिए सबूत देता है।

10. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग की मॉनिटरिंग और सुपरविज़न

KVS प्रिंसिपल के तौर पर, मॉनिटरिंग में ये शामिल हैं:

-
1. **कक्षा अवलोकन**
इंडिकेटर्स का इस्तेमाल करके सिस्टमैटिक ऑब्ज़र्वेशन।
 2. **लेसन प्लान चेक करना**
काबिलियत के साथ तालमेल पक्का करना।
 3. **असेसमेंट डेटा की समीक्षा करना**
लर्निंग इंडिकेटर्स और FLN बेंचमार्क को ट्रैक करना।
 4. **फ़ीडबैक देना**
कंस्ट्रक्टिव, सबूत-आधारित, लगातार।
 5. **क्षमता निर्माण का संचालन**
वर्कशॉप, पीयर लर्निंग कम्युनिटी, मेटरिंग।
 6. **संसाधन अनुकूलन**
यह पक्का करना कि TLM और डिजिटल टूल्स का इस्तेमाल अच्छे से हो।
 7. **अकादमिक समीक्षा बैठकें**
महीने की, यूनिट के हिसाब से और टर्म के हिसाब से मॉनिटरिंग मीटिंग।
 11. **टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग में चुनौतियाँ**
 1. **ओवरलोडेड करिकुलम**
इससे डिलीवरी जल्दी हो जाती है।
 2. **अपर्याप्त प्रशिक्षण**
टीचर्स को कॉम्पिटेन्सी-बेस्ड प्लानिंग की जानकारी नहीं है।
 3. **विविध शिक्षार्थी**
सभी के लिए एक सही प्लान बनाना मुश्किल है।
 4. **संसाधन की कमी**
सीमित TLM या डिजिटल एक्सेस।
 5. **समय की कमी**
बहुत ज़्यादा एडमिनिस्ट्रेटिव काम।
 6. **सहयोग की कमी**
अकेले काम कर रहे टीचर।
 12. **टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग को मज़बूत करने में स्कूल लीडर की भूमिका**
 - i. **विज़न सेटिंग**
प्रिंसिपल ने NEP 2020 के साथ तालमेल बिठाते हुए पढ़ाई का विज़न तय किया।
 - ii. **संसाधन प्रबंधन**
जगह, सामान, डिजिटल सुविधाओं का सही बंटवारा पक्का करना।
 - iii. **शैक्षणिक नेतृत्व**
टीचरों को मेटर करना, असरदार प्लानिंग के तरीकों का मॉडल बनाना।
 - iv. **निगरानी और प्रतिक्रिया**
सुपरविज़न साइकिल (प्री-ऑब्ज़र्वेशन → ऑब्ज़र्वेशन → पोस्ट-फ़ीडबैक)।
 - v. **व्यावसायिक विकास**
टीचर्स की लगातार कैपेसिटी बिल्डिंग।
 - vi. **सहयोगात्मक संस्कृति का निर्माण**
शेयर्ड प्लानिंग के लिए PLC (प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटीज़)।
 - vii. **एक सपोर्टिव माहौल बनाना**
इनोवेशन, एक्सपेरिमेंट और सोच-विचार को बढ़ावा देना।
 13. **प्लानिंग में डिजिटल टेक्नोलॉजी का इंटीग्रेशन**
डिजिटल प्लानिंग में शामिल हैं:

- डिजिटल पाठ योजनाएँ
 - ई-सामग्री मानचित्रण
 - एलएमएस का उपयोग
 - डिजिटल टूल्स का इस्तेमाल करके मिलकर प्लानिंग मीटिंग्स करना
 - डिजिटल मूल्यांकन
 - डैशबोर्ड के माध्यम से डेटा-संचालित निर्देश
 - ई विभागों
 - डिजिटल टीएलएम
- KVS प्रिंसिपल को मौजूदा पॉलिसी निर्देशों के अनुसार क्लासरूम प्लानिंग में ICT इंटीग्रेशन पक्का करना होगा।

14. टीचिंग-लर्निंग प्लानिंग को प्रभावित करने वाले उभरते ट्रेंड्स

1. योग्यता-आधारित शिक्षा

प्लानिंग आउटकम-ड्रिवन होती है।

2. पर्सनलाइज्ड लर्निंग

कंटेंट को कस्टमाइज्ड करने के लिए AI-इनेबल्ड सिस्टम।

3. हाइब्रिड शिक्षाशास्त्र

ऑफ़लाइन और ऑनलाइन मोड का इंटीग्रेशन।

4. डेटा-ड्रिवन लर्निंग

असेसमेंट एनालिटिक्स प्लानिंग में गाइड करता है।

5. यूनिवर्सल डिज़ाइन फ़ॉर लर्निंग (UDL)

सबको साथ लेकर चलने वाला रिप्रेजेंटेशन, एंगेजमेंट और एक्सप्लोरेशन के ऑप्शन।

6. बहुभाषी शिक्षा

NEP 2020 के अनुसार बाइलिंगुअल/मल्टीलिंगुअल स्ट्रेटेजी।

15. निष्कर्ष (चैट्टर का समय से पहले बंद नहीं)

प्लानिंग, अच्छी टीचिंग-लर्निंग और स्कूल के असरदार होने का आधार है। KVS प्रिंसिपल के लिए, प्लानिंग एक टेक्निकल स्किल और लीडरशिप की जिम्मेदारी दोनों है। प्लानिंग की गहराई, सटीकता और काम की होने की क्षमता सीधे तौर पर सीखने के नतीजों, FLN बेंचमार्क, स्कूल कल्चर, टीचर के परफॉर्मेंस और इंस्टीट्यूशन की पूरी एकेडमिक रेप्युटेशन पर असर डालती है।

सिलेबस: अर्थ, स्कोप, कंपोनेंट्स और टाइम्स

ओवरव्यू - KVS प्रिंसिपल एग्जाम के लिए यह चैट क्यों ज़रूरी है

सिलेबस (और उसका करीबी, करिकुलम) उन सभी एकेडमिक लीडरशिप कामों की रीढ़ है जो एक प्रिंसिपल को करने होते हैं: सालाना एकेडमिक प्लानिंग, टीचर सुपरविज़न, लर्निंग आउटकम (FLN सहित) की मॉनिटरिंग, लेसन-प्लान चेक, असेसमेंट अलाइनमेंट, और रिसोर्स एलोकेशन। KVS और CBSE ने पिछले सालों में सिलेबस और करिकुलम के अंतर, ऑर्गनाइज़ेशन और ऑपरेशनलाइज़ेशन पर बार-बार कॉन्सेप्चुअल और एप्लीकेशन-बेस्ड सवाल पूछे हैं; इसलिए, KVS प्रिंसिपल एग्जाम के लिए कॉन्सेप्चुअल क्लैरिटी और प्रैक्टिकल एप्लीकेशन (सिलेबस को स्कूल प्लान, टाइम-टेबल और असेसमेंट ब्लूप्रिंट में कैसे बदलें) दोनों में मास्टरी ज़रूरी है।

1. मतलब: सिलेबस - परिभाषा और मकसद

सिलेबस एक डिटेल्ड, अक्सर बताया हुआ स्टेटमेंट होता है जिसमें किसी खास कोर्स, ग्रेड या सबजेक्ट में एक तय टाइम फ्रेम में कवर किए जाने वाले टॉपिक्स, कंटेंट एरिया और कभी-कभी लर्निंग आउटकम या कॉम्पिटेंसी की जानकारी होती है। यह एग्जामिनेशन/एफिलिएटिंग बॉडी (CBSE/KVS/) और स्कूलों/टीचर्स के बीच कॉन्ट्रैक्ट डॉक्यूमेंट के तौर पर काम करता है, जिसमें बताया जाता है कि स्टूडेंट्स को किस कंटेंट का सामना करना चाहिए।

सिलेबस का मकसद (स्कूल लीडर्स के लिए ऑपरेशनल व्यू):

- किसी दिए गए टर्म/साल में हासिल किए जाने वाले कंटेंट और कॉम्पिटेंसी की एक खास लिस्ट देता है।
- एनुअल प्लान, यूनिट प्लान और लेसन प्लान तैयार करने के लिए बेस के तौर पर काम करता है।
- टीचर्स के रिसोर्स चुनने और असेसमेंट डिज़ाइन को गाइड करता है।
- माता-पिता और स्टैकहोल्डर्स को यह समझने में मदद करता है कि स्कूल क्या पढ़ाना चाहता है।
- एग्जाम और सर्टिफिकेशन के लिए मेज़रेबल बाउंड्री देता है।

अंतर (संक्षिप्त): सिलेबस = क्या पढ़ाना है (कंटेंट/कॉम्पिटेंसी); करिकुलम (जिस पर बाद में बात होगी) = क्यों, कैसे, और किस संदर्भ में पढ़ाया जाता है (बड़े लक्ष्य, पढ़ाने का तरीका, अनुभव)। पॉलिसी अलाइनमेंट और करिकुलम सुधारों (NCF/NEP) के लिए, प्रिंसिपल को यह पक्का करना होगा कि स्कूल का सिलेबस लागू करना करिकुलम के इरादों को दिखाए। (NCF और इससे जुड़े फ्रेमवर्क इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सिलेबस एक बड़े करिकुलम फ्रेमवर्क के अंदर करिकुलम की डिटेल्स हैं।)

2. सिलेबस का स्कोप (स्कूल प्लानिंग के लिए लागू)

सिलेबस के दायरे में कई पहलू शामिल होते हैं जिनका इस्तेमाल प्रिंसिपल प्लानिंग करते समय करता है:

1. कंटेंट कवरेज - टॉपिक, सब-टॉपिक, सुझाए गए सब-स्किल।
2. लर्निंग आउटकम/कॉम्पिटेंसी - हाल के फ्रेमवर्क में, सिलेबस में सिर्फ टॉपिक लिस्ट के बजाय कॉम्पिटेंसी और लर्निंग आउटकम के बारे में ज्यादा बताया जाता है।
3. ग्रेड-वाइज़ प्रोग्रेस - क्लास और टर्म में टॉपिक्स का डिस्ट्रीब्यूशन (वर्टिकल आर्टिकुलेशन)।
4. सबजेक्ट पर एक-दूसरे पर निर्भरता - क्रॉस-करिकुलर लिंक (हॉरिजॉन्टल आर्टिकुलेशन) के लिए पॉइंट्स।
5. टाइम एलोकेशन - टॉपिक के लिए रिकमेंडेड इंस्ट्रक्शनल पीरियड या वेटेज।
6. असेसमेंट इंडिकेटर - इवैल्यूएशन के सुझाए गए तरीके या सैपल टास्क।
7. पेडागॉजिकल सुझाव - मॉडर्न सिलेबस में तरीकों (एक्टिविटी-बेस्ड, एक्सपीरिएंशियल) या रिसोर्स (लैब वर्क, प्रोजेक्ट्स) के रेफरेंस।
8. इनक्लूसिविटी और डिफरेंशिएशन नोट्स - अलग-अलग तरह के सीखने वालों के लिए अकोमोडेशन और अडैप्टेशन (आजकल CBSE/नेशनल गाइडलाइंस में आ रहे हैं)।
एक प्रिंसिपल के तौर पर, स्कोप को एनुअल करिकुलम प्लान (ACP), मंथली यूनिट्स और टीचर चेकलिस्ट में बदलना मेन एडमिनिस्ट्रेटिव जिम्मेदारी है।

3. एक असरदार सिलेबस के हिस्से (स्कूल के डॉक्यूमेंट्स में क्या देखें और क्या शामिल करें)

सिलेबस की स्कूल लेवल पर व्याख्या में इन चीजों को एक्शन लेने लायक प्लान में बदलना चाहिए:

1. शुरुआती तर्क: सबजेक्ट के मकसद को स्कूल के मकसद और काबिलियत से जोड़ने वाला छोटा बयान (CBSE के मकसद को लोकल ज़रूरतों के हिसाब से देखें)।
2. लर्निंग आउटकम / कॉम्पिटेंसी स्टेटमेंट: ऐसे स्टेटमेंट जो देखने या दिखाने लायक हों और बताएं कि सीखने वाले क्या कर पाएंगे। (उदाहरण फॉर्मेट: छात्र... एनालाइज़ कर पाएंगे, बना पाएंगे, दिखा पाएंगे, लागू कर पाएंगे...)
3. कंटेंट/टॉपिक्स: टॉपिक्स और सबटॉपिक्स की एक के बाद एक लिस्ट, जिसमें डेपथ इंडिकेटर (सरफेस, कोर, स्ट्रेच) हों।
4. सुझाई गई पेडागॉजी: तरीकों के संकेत (पूछताछ, लैब, प्रोजेक्ट वर्क, कोऑपरेटिव लर्निंग) और अंतर के लिए सुझाव।
5. टाइम एलोकेशन: पीरियड की संख्या, टर्म और यूनिट में रिकमेंडेड डिस्ट्रीब्यूशन।
6. असेसमेंट प्लान: नतीजों (रूब्रिक्स, परफॉर्मेंस टास्क, लिखित टेस्ट) के हिसाब से फॉर्मेटिव और समेटिव असेसमेंट मोड।
7. रिसोर्स और TLMs: टेक्स्टबुक, रेफरेंस मटीरियल, डिजिटल रिसोर्स (DIKSHA, ई- पाठशाला), मैनिपुलेटिव्स, लैब की ज़रूरतें।
8. क्रॉस-करिकुलर लिंकेज और लाइफ-स्किल्स: ऐसे साफ़ पॉइंट्स जहाँ टॉपिक भाषा, EVS, मैथ्स, लाइफ-स्किल्स और 21वीं सदी की कॉम्पिटेंसी से जुड़ता है।
9. इन्क्लूजन और अडैप्टेशन नोट्स: रिमेडियल/एनरिचमेंट लर्निंग के लिए स्ट्रेटजी, CWSN अकोमोडेशन।
10. फीडबैक और रिफ्लेक्शन प्रोटोकॉल: टीचर के रिफ्लेक्शन, पीयर रिव्यू और एविडेंस कलेक्शन (पोर्टफोलियो) के लिए पॉइंट्स। एक मज़बूत स्कूल सिलेबस अडैप्टेशन सभी टीचर्स और प्रिंसिपल के मॉनिटरिंग टूलकिट के लिए वर्किंग डॉक्यूमेंट बन जाता है।

4. सिलेबस के प्रकार - थ्योरेटिकल टाइपोलॉजी और प्रैक्टिकल रेलेवेंस

सिलेबस को कई तरह से बांटा गया है; मैं उन टाइप पर बात करता हूँ जो ऑपरेशनल स्कूल लीडरशिप और एग्जाम लेवल के सवालियों के लिए सबसे ज्यादा मायने रखते हैं:

क) विषय-केंद्रित (विषय-सामग्री) पाठ्यक्रम

फोकस: टॉपिक्स का सीकेंस, अक्सर क्रोनोलॉजिकल या लॉजिकल (हिस्ट्री या साइंस कंटेंट लिस्ट)।

रेलिवेंस: स्कोप और सीकेंस की ट्रेडिशनल प्रिंटिंग में आम। प्रिंसिपल को यह देखना होगा कि क्या ऐसे सिलेबस कॉम्पिटेंसी स्टेटमेंट्स के साथ कॉम्प्लिमेंट किए गए हैं।

ख) उद्देश्य-केंद्रित (व्यवहारिक) पाठ्यक्रम

फोकस: बिहेवियरल शब्दों में बताए गए खास लर्निंग ऑब्जेक्टिव (जैसे, पहचानना, लिस्ट बनाना, समझाना)। मेज़रेबल असेसमेंट डिज़ाइन के लिए उपयोगी। बिहेवियरिस्ट ट्रेडिशन के साथ अलाइन होता है और टेस्ट कंस्ट्रक्शन के लिए वैल्यूएबल है।

ग) योग्यता-आधारित / परिणाम-आधारित पाठ्यक्रम

फोकस: स्टूडेंट्स को जो काबिलियत और परफॉर्मेंस के नतीजे दिखाने होंगे। NEP/NCF और CBSE इस तरफ मजबूती से बढ़ रहे हैं। KVS के लिए, हाल के निर्देशों और स्कूल प्रैक्टिस के हिसाब से काबिलियत को यूनिट्स और असेसमेंट से मैप करना ज़रूरी है।

द) प्रक्रिया-उन्मुख (कौशल-आधारित) पाठ्यक्रम

फोकस: प्रोसेस और स्किल्स (साइंटिफिक मेथड, राइटिंग स्किल्स, प्रॉब्लम-सॉल्विंग), सिर्फ कंटेंट नहीं। प्रोजेक्ट वर्क और हायर-ऑर्डर स्किल्स के असेसमेंट के लिए उपयोगी।

ई) अनुभव-केंद्रित (गतिविधि-आधारित) पाठ्यक्रम

फोकस: फील्डवर्क, लैब्स, प्रोजेक्ट्स और कम्युनिटी एंगेजमेंट के ज़रिए सीखना। NCF/NEP के अनुसार ECCE और फाउंडेशनल स्टेज के लिए ज़रूरी।

च) एकीकृत / अंतःविषय पाठ्यक्रम

फोकस: अलग-अलग सबजेक्ट्स (एनवायरनमेंट, सस्टेनेबिलिटी, हेल्थ) पर चलने वाली थीम। NEP फ्रैगमेंटेशन कम करने के लिए इंटीग्रेशन की सलाह देता है।

g) स्पाइरल बनाम लीनियर सिलेबस

- लीनियर पूरे टॉपिक को एक ब्लॉक में रखता है; स्पाइरल अलग-अलग ग्रेड में बढ़ती मुश्किल वाले टॉपिक को फिर से दिखाता है। एक प्रिंसिपल के तौर पर आपको यह पक्का करना चाहिए कि स्कूल का इम्प्लीमेंटेशन कंटेंट-लिस्ट की साफ-सफ़ाई को काबिलियत और प्रोसेस एलिमेंट्स के साथ मिलाए - यह बैलेंस अब PYQs और परफॉर्मेंस टास्क में एक रेगुलर टारगेट है। ()

5. सिलेबस बनाने के सिद्धांत (सिलेबस ट्रांसलेशन की देखरेख करने वाले प्रिंसिपल के लिए प्रैक्टिकल चेकलिस्ट)

जब स्कूल सिलेबस को अडैप्ट/अलाइन करते हैं, तो इन प्रिंसिपल्स को लागू करें:

- वैलिडिटी:** कंटेंट में बताए गए मकसद और काबिलियत दिखनी चाहिए।
- चौड़ाई और गहराई:** ज़्यादा जानकारी से बचें - सिर्फ कवरेज के बजाय ज़रूरी कॉन्सेप्ट को गहराई से बैलेंस करें।
- कंटि-यूटी और प्रोग्रेस:** सभी ग्रेड में वर्टिकल सीकेंसिंग और सबजेक्ट में हॉरिजॉन्टल लिंक पक्का करें।
- बैलेंस:** कॉग्निटिव (नॉलेज), साइकोमोटर (स्किल्स), और अफेक्टिव (एटीट्यूड/वैल्यूज़)।
- रेलिवेंस:** लोकल कॉन्टेक्ट, रियल-लाइफ एप्लीकेशन, और 21वीं सदी के स्किल्स।
- संभावना:** समय, रिसोर्स और टीचर की क्षमता का मिलान करें।
- इनक्लूसिविटी:** सभी लर्नर्स के लिए एक्सेसिबिलिटी और CWSN के लिए प्रोविज़न।
- फ्लेक्सिबिलिटी:** टीचर इनोवेशन, सुधार और बेहतर बनाने के इनपुट के लिए जगह।
- असेसेबिलिटी :** नतीजे मेज़रेबल होने चाहिए; असेसमेंट के तरीके नतीजों के साथ अलाइन होने चाहिए।
- सीखने वाले पर ध्यान देना :** रटने के बजाय एक्टिव लर्निंग पर ज़ोर देना। प्रिंसिपलों को इन्हें एनुअल करिकुलम प्लान (ACP) में लागू करना होगा और इसकी फिडेलिटी पर नज़र रखनी होगी।

6. बोर्ड/स्टेट सिलेबस को स्कूल-लेवल ऑपरेशनल प्लान में बदलने के स्टेप्स

प्रिंसिपल्स के लिए एक प्रैक्टिकल, दोहराने लायक पांच-स्टेप प्रोसेस:

स्टेप 1 - इंटरप्रेट और अनपैक करें: एकेडमिक टीम सिलेबस पढ़ती है, कॉम्पिटेन्सी और ज़रूरी लर्निंग आउटकम पर रोशनी डालती है। जहां NCF/NEP गाइडेंस दी गई हो, वहां उसका लिंक दें। (KVS/CBSE कॉन्टेक्ट में, ECCE/FLN को अलाइन करने के लिए NCF/NCF-फाउंडेशनल का इस्तेमाल करें।) ()

स्टेप 2 - मैप और सीकेंस: ग्रेड के हिसाब से कॉम्पिटेन्सी मैप और यूनिट सीकेंस बनाएं - तय करें कि टर्म-I/टर्म-II और एनुअल प्लान में क्या कवर किया जाएगा।

स्टेप 3 - टाइम और रिसोर्स का बंटवारा: यूनिट मैप को मंथली कैलेंडर में बदलें, सिखाने के घंटे, लैब सेशन, लाइब्रेरी पीरियड, प्रोजेक्ट विंडो और असेसमेंट विंडो बांटें।

स्टेप 4 - पेडागॉजी और असेसमेंट प्लानिंग: हर यूनिट के लिए, पेडागॉजी अप्रोच (इनकायरी, लैब, प्रोजेक्ट) और असेसमेंट एविडेंस (रूब्रिक, टेस्ट, परफॉर्मेंस टास्क) बताएं। एग्जांपल लेसन प्लान और रूब्रिक तैयार करें।

स्टेप 5 - मॉनिटर और रिवाइज़ करें: क्लासरूम ऑब्ज़र्वेशन, डेटा-ड्रिवन रिव्यू (स्टूडेंट परफॉर्मेंस, अटेंडेंस, FLN इंडिकेटर), रिमेडियल प्लान और टीचर फीडबैक लूप शेड्यूल करें।

यह दोहराने वाला साइकिल (समझाना → मैप करना → बांटना → लागू करना → रिव्यू करना) स्कूल एकेडमिक लीडरशिप का मुख्य हिस्सा है और अक्सर प्रैक्टिकल PYQ सिनेरियो में दिखाई देता है।

7. सिलेबस बनाम करिकुलम - स्कूल लीडर्स के लिए एक ऑपरेशनल तुलना

- करिकुलम** = बड़ा फ्रेमवर्क: लक्ष्य, वैल्यू, तरीके, सीखने के अनुभव, असेसमेंट फिलॉसफी, और सीखने में मदद करने वाला माहौल। (NCF एक करिकुलम फ्रेमवर्क है।) ()
- सिलेबस** = करिकुलम से लिया गया डिटेल्ड कंटेंट/कॉम्पिटेन्सी स्पेसिफिकेशन।
- टेक्स्टबुक्स और क्लासरूम ट्रांज़ैक्शन** = लागू किया गया सिलेबस (जो टीचर असल में पढ़ाते हैं)।
- हिडन करिकुलम** = स्कूल कल्चर के ज़रिए बताए गए छिपे हुए मैसेज, वैल्यू, रूटीन। प्रिंसिपल को सभी लेयर्स में अलाइनमेंट पक्का करना होगा: करिकुलम (पॉलिसी) → सिलेबस (डॉक्यूमेंट) → टेक्स्टबुक/रिसोर्स → क्लासरूम ट्रांज़ैक्शन → लर्नर आउटकम। मिसमैच (जैसे, करिकुलम में कॉम्पिटेन्सी लैंग्वेज लेकिन क्लासरूम में रटने के तरीके) एक आम ऑडिटेड कमज़ोरी है।

8. PYQs और पिछले पेपर्स से सबूत - एग्जामिनर क्या टेस्ट करते हैं (प्रैक्टिकल लेंस)

पिछले KVS प्रिंसिपल/एकेडमिक सेक्शन के पेपर्स और सैपल LDE पेपर्स के एनालिसिस से पता चलता है कि सवाल आमतौर पर इन चीज़ों को टेस्ट करते हैं:

- कॉन्सेप्टुअल अंतर (सिलेबस बनाम करिकुलम; खुला बनाम छिपा हुआ करिकुलम)।
- एप्लीकेशन (दिए गए सिलेबस के हिस्से से सालाना प्लान बनाएं; कमियों को पहचानें)।
- प्रिंसिपल्स (किसी दिए गए सिलेबस डिज़ाइन से कौन सा प्रिंसिपल टूटता है)।

- प्रैक्टिकल प्रॉब्लम सॉल्विंग (जब लैब पीरियड कम हो जाए तो समय को रीएलोकेट करें; सिलेबस को FLN टारगेट के साथ अलाइन करने के लिए इंटरवेंशन का सुझाव दें)।
इसलिए, **कॉन्सेप्चुअल** (डिफाइन/कम्पेयर/एक्सप्लेन) और **सिचुएशनल** (अप्लाई/जस्टिफाई/रिकमेंड) दोनों तरह के सवालों के जवाब देने के लिए तैयार रहें। पिछले पेपर्स और पैटर्न के सोर्स KVS आर्काइव्स और जाने-माने एग्जाम प्रेप रिपॉजिटरी से मिल सकते हैं।
- 9. **सिलेबस को समझने में आने वाली आम कमियां और प्रिंसिपल को उन्हें कैसे ठीक करना चाहिए**
 1. **कंटेंट कवरेज पर ज्यादा जोर** - ठीक करें: कॉम्पिटेन्सी और डेपथ डिस्क्रिप्टर का इस्तेमाल करके प्लान को फिर से बनाएं।
 2. **वर्टिकल आर्टिकुलेशन को नज़रअंदाज़ करना** - ठीक करें: सभी ग्रेड में यूनिट सीकेंसिंग पक्का करें (स्पाइरल करिकुलम)।
 3. **असेसमेंट और नतीजों में अंतर** - ठीक करें: डिज़ाइन रूब्रिक्स और परफॉर्मेंस टास्क को कॉम्पिटेन्सी के हिसाब से बनाएं।
 4. **प्लानिंग में टीचर का अकेलापन** - ठीक करें: PLC और मिलकर प्लानिंग करने के स्लॉट तय करें।
 5. **रिसोर्स ब्लाइंड स्पॉट** - फिक्स: रिसोर्स ऑडिट और कम लागत वाले TLM प्लान।
 6. **ECCE/FLN लिंकेज की अनदेखी** - ठीक करें: ग्रेड 1-3 के प्लान (फोनिक्स, नंबर सेंस टास्क) में साफ़ FLN मैपिंग। (NCF/फाउंडेशनल स्टेज डॉक्यूमेंट्स साफ़ गाइडेंस देते हैं।) ()
- 10. **प्रिंसिपल के लिए प्रैक्टिकल चेकलिस्ट (ऑपरेशनल टूल जिसे आप तुरंत इस्तेमाल कर सकते हैं)**
 1. अपने संबंधित ग्रेड के लिए लेटेस्ट बोर्ड सिलेबस और NCF/गाइडेंस पाएं।
 2. हर सब्जेक्ट की काबिलियत को समझने के लिए एकेडमिक कमेटी बुलाएं।
 3. यूनिट डिस्ट्रीब्यूशन और लिस्टेड रिसोर्स के साथ ACP बनाएं।
 4. हर यूनिट के लिए सैपल लेसन और असेसमेंट के उदाहरण तैयार करें।
 5. टीचर कोलेबोरेटिव प्लानिंग (महीने) शेड्यूल करें।
 6. एक स्कूल रूब्रिक बैंक और परफॉर्मेंस टास्क बैंक बनाएं।
 7. सिलेबस लागू करने से जुड़े क्लासरूम ऑब्ज़र्वेशन का शेड्यूल बनाएं।
 8. सबूत वाले फ़ोल्डर (टीचर प्लान, स्टूडेंट का काम, असेसमेंट डेटा) बनाए रखें।
 9. हर टर्म में रिव्यू मीटिंग करें- डेटा पर फोकस (लर्निंग गैप और इंटरवेंशन)।
 10. इवैल्यूएशन के नतीजों के आधार पर हर साल सिलेबस में बदलाव को अपडेट करें।

पाठ्यक्रम: अर्थ, उद्देश्य, संरचना और निर्धारक

1. **करिकुलम का मतलब - एक पूरी, एकेडमिक व्याख्या**
करिकुलम वह सब कुछ है जो एक स्टूडेंट स्कूल में इंस्टीट्यूशन के डायरेक्शन में प्लान किया हुआ, गाइडेड और एक्सपीरियेंसड लर्निंग से सीखता है। यह सिर्फ़ टेक्स्टबुक या क्लासरूम टीचिंग तक ही सीमित नहीं है; बल्कि, यह एक इंटीग्रेटेड एजुकेशनल डिज़ाइन है जिसमें मकसद, वैल्यू, कंटेंट, सिखाने-सीखने का प्रोसेस, सीखने के अनुभव, असेसमेंट आर्किटेक्चर, को-स्कॉलैस्टिक प्रोग्राम, स्कूल कल्चर, फिजिकल और डिजिटल माहौल, और सभी ऑर्गनाइज़्ड एक्टिविटीज़ शामिल हैं जो पूरे डेवलपमेंट में मदद करती हैं।
इसलिए एक करिकुलम में ये चीज़ें होती हैं:
 - तय करिकुलम (जो पॉलिसी बनाने वाले तय करते हैं)।
 - पूरा किया गया करिकुलम (जो टीचर असल में पढ़ाते हैं)।
 - अनुभवी करिकुलम (सीखने वाले असल में क्या समझते हैं और बदलते हैं)।
 - हासिल किया गया करिकुलम (जो सीखने वाले आखिर में नतीजों से दिखाते हैं)।**एकेडमिक प्लानिंग, स्कूल इम्प्रूवमेंट प्लानिंग, टीचर सुपरविज़न, परफॉर्मेंस मॉनिटरिंग और रिसोर्स एलोकेशन का** आधार है। यह टाइम-टेबल बनाने, असेसमेंट शेड्यूल, एक्सपीरियेंशियल लर्निंग प्रोग्राम और FLN, ECCE, CBE और डिजिटल पेडागॉजी के इंटीग्रेशन के बारे में भी बताता है।
 2. **पाठ्यक्रम के दार्शनिक और सैद्धांतिक आधार**
करिकुलम कई एजुकेशनल फिलॉसफी से बनता है। एक प्रिंसिपल को हर एक को पहचानना आना चाहिए क्योंकि करिकुलम एनालिसिस के सवालों के लिए अक्सर फिलॉसॉफिकल जस्टिफिकेशन की ज़रूरत होती है।
- क) आदर्शवाद**
मूल्यों, नैतिक विकास, सांस्कृतिक विरासत और महान विचारों पर जोर दिया जाता है। करिकुलम में क्लासिक्स, नैतिक विज्ञान, साहित्य और वैल्यू एजुकेशन पर जोर दिया जाता है।
- ख) यथार्थवाद**
फैक्ट्स की जानकारी, लॉजिकल सीकेंसिंग, देखी जा सकने वाली असलियत पर फोकस करता है। साइंस और सोशल साइंस में स्ट्रक्चर्ड, कंटेंट-हैवी करिकुलम की ओर ले जाता है।
- ग) व्यावहारिकता**
करके सीखने, प्रॉब्लम सॉल्विंग, एक्सपीरियेंशियल एक्टिविटीज़, असल ज़िंदगी के कामों को बढ़ावा देता है। यह सोच NCF, NEP 2020 और एक्टिविटी-बेस्ड लर्निंग पर असर डालती है।

d) प्रकृतिवाद

बच्चे के जन्मजात विकास, तैयारी और प्राकृतिक अनुभवों से सीखने पर ध्यान देता है। ECCE और बुनियादी करिकुलम पर बड़ा असर।

ई) रचनावाद

यह माना जाता है कि सीखने वाले एक्टिवली मतलब बनाते हैं; करिकुलम में पूछताछ, सहयोग, सोच-विचार, हायर-ऑर्डर कॉग्निटिव कामों पर ज़ोर दिया जाता है।

च) मानवतावाद

सेल्फ-डेवलपमेंट, ऑटोनॉमी, क्रिएटिविटी, इमोशनल वेल-बीइंग, वैल्यूज़ और सिटिज़नशिप पर फोकस करता है। एक करिकुलम डॉक्यूमेंट हमेशा इन फिलॉसफी का मिला-जुला रूप होता है; NEP 2020 में **कंस्ट्रक्टिविज़्म**, **प्रेगमैटिज़्म** और **ह्यूमनिज़्म को साफ तौर पर शामिल किया गया है, साथ ही मल्टीडिसिप्लिनरी इंटीग्रेशन और कॉम्पिटेन्सी मास्टरी** के लिए जगह भी दी गई है।

3. स्कूल सिस्टम में करिकुलम का मकसद और काम

करिकुलम कई मैक्रो और माइक्रो मकसद पूरे करता है:

1. दिशा और सुसंगति

यह पूरे टीचिंग-लर्निंग सिस्टम को एक जैसी दिशा देता है। करिकुलम में तालमेल के बिना, टीचर अकेले काम करते हैं और पढ़ाई बिखर जाती है।

2. शिक्षा के लक्ष्यों को एक्शन में बदलना

राष्ट्रीय लक्ष्य (संवैधानिक मूल्य, नागरिकता शिक्षा, FLN, 21वीं सदी की काबिलियत, वोकेशनल अनुभव, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा) करिकुलम डिज़ाइन के ज़रिए काम करने लगते हैं।

3. योग्यताओं और क्षमताओं का विकास

करिकुलम में कॉग्निटिव, सोशियो-इमोशनल और साइकोमोटर कॉम्पिटेन्सी बताई गई हैं, जिसमें प्रॉब्लम-सॉल्विंग, एनालिटिकल रीज़निंग, क्रिएटिविटी, एंपैथी, कम्युनिकेशन, मल्टीलिंगुअल स्किल्स, डिजिटल लिटरेसी शामिल हैं।

4. कंटिन्यूटी और प्रोग्रेस सुनिश्चित करना

करिकुलम सिंपल → इंटरमीडिएट → एडवांस्ड कॉन्सेप्ट्स की प्रोग्रेस को बताता है, और वर्टिकल और हॉरिज़ॉन्टल अलाइनमेंट बनाए रखता है।

5. असेसमेंट के लिए एक फ्रेमवर्क देना

करिकुलम असेसमेंट का मकसद, तरीके, सबूत और फीडबैक साइकिल बताता है। काबिलियत पर आधारित असेसमेंट सीधे करिकुलम फिलॉसफी से आता है।

6. टीचर्स के पेडागॉजिकल फैसलों को गाइड करना

टीचर करिकुलम के मकसद के आधार पर तरीके, मटीरियल, स्ट्रेटेजी और सीखने के अनुभव चुनते हैं।

7. समग्र विकास को सुविधाजनक बनाना

करिकुलम में आर्ट्स एजुकेशन, स्पोर्ट्स, योग, कम्युनिटी सर्विस, क्लब, हाउस एक्टिविटीज़, फील्ड ट्रिप, लाइब्रेरी प्रोग्राम, ICT लिटरेसी, मोरल और एनवायरनमेंटल एजुकेशन शामिल हैं।

8. स्कूलों में मानकीकरण

करिकुलम सभी KVS स्कूलों में एकेडमिक यूनिफॉर्मिटी बनाता है, जिससे इकटि और एक जैसी लर्निंग उम्मीदें पक्की होती हैं।

9. स्कूल की जवाबदेही को सपोर्ट करना

स्टूडेंट की परफॉर्मेंस, टीचर की परफॉर्मेंस, ऑडिट के नतीजे, और एकेडमिक इंस्पेक्शन, सभी को करिकुलम की उम्मीदों के हिसाब से जांचा जाता है।

4. करिकुलम स्ट्रक्चर - माइक्रो से मैक्रो लेवल तक

करिकुलम कई लेयर्स में ऑर्गनाइज़ किया गया है। प्रिंसिपल को हर लेयर को समझना चाहिए क्योंकि स्कूल का एनुअल एकेडमिक प्लान (AAP) इन्हीं लेयर्स पर बना होता है।

1. मैक्रो-लेवल संरचना

• नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क (NCF)

नेशनल लक्ष्यों, सीखने के स्टेज, पढ़ाने के सिद्धांतों और काबिलियत की उम्मीदों को बताता है।

• करिकुलम एरिया / डोमेन

भाषा शिक्षा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, वोकेशनल शिक्षा, शारीरिक शिक्षा, नैतिक और मूल्य शिक्षा।

• चरण-विशेष पाठ्यक्रम

आधारभूत → प्रारंभिक → मध्य → माध्यमिक।

2. मेसो -लेवल संरचना

- **सब्जेक्ट के हिसाब से करिकुलम डॉक्यूमेंट्स**
इनमें सबजेक्ट के हिसाब से काबिलियत, उम्मीद के मुताबिक नतीजे और पढ़ाने के तरीके की जानकारी होती है।
- **लर्निंग स्टैंडर्ड्स और बेंचमार्क**
इंडिकेटर जो बताते हैं कि ग्रेड लेवल पर प्रोफिशियन्सी कैसी दिखती है।

3. सूक्ष्म-स्तरीय संरचना

- **सिलेबस** (करिकुलम का एक सबसेट)
टॉपिक लिस्ट, यूनिट आउटलाइन, और कंटेंट बाउंड्री।
- **पेडागॉजिकल अप्रोच**
एक्टिविटी-बेस्ड, इंकायरी, एक्सपीरिएण्शियल, ब्लेंडेड, कोऑपरेटिव।
- **असेसमेंट फ्रेमवर्क**
प्रोजेक्ट वर्क, पोर्टफोलियो, रूब्रिक-बेस्ड असेसमेंट, रिटन टेस्ट, ओरल एग्जाम, परफॉर्मेंस टास्क।
- **रिसोर्स और TLM इंटीग्रेशन**
टेक्स्टबुक, रेफरेंस बुक्स, डिजिटल टूल्स, लैब्स, मैनिपुलेटिव्स।

4. विस्तारित संरचना

- **को-स्कॉलैस्टिक करिकुलम**
स्कूल क्लब, स्पोर्ट्स, म्यूज़िक, आर्ट्स, SUPW, कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स।
- **हिडन करिकुलम**
स्कूल कल्चर में शामिल वैल्यूज़, नज़रिया, रूटीन, व्यवहार।

5. करिकुलम के फॉर्मल, इनफॉर्मल और हिडन कंपोनेंट्स

करिकुलम कभी भी एक लिखा हुआ डॉक्यूमेंट नहीं होता; इसमें कई दिखने वाले और न दिखने वाले हिस्से होते हैं:

क) औपचारिक (प्रकट) पाठ्यक्रम

ऑफिशियल, लिखा हुआ, डॉक्यूमेंटेड हिस्सा:

- एनसीएफ
- विषय-विशिष्ट पाठ्यक्रम
- पाठ्यक्रम
- पाठ्यपुस्तकें
- शिक्षक मैनुअल
- मूल्यांकन दिशानिर्देश

ख) अनौपचारिक पाठ्यक्रम

यह बातचीत, को-करिकुलर एक्टिविटीज़, असेंबली, क्लब, स्कूल इवेंट्स, कम्युनिटी कॉन्टैक्ट्स, लाइब्रेरी के घंटों, साथियों के साथ बातचीत से उभरता है।

ग) छिपा हुआ पाठ्यक्रम

बिना बताए गए नियम, व्यवहार से जुड़ी उम्मीदें, स्कूल का रूटीन, टीचर का रवैया, साथियों का कल्चर, स्कूल का माहौल। यह सीखने वाले की पहचान और मूल्यों को फॉर्मल करिकुलम से ज़्यादा मज़बूती से बनाता है। प्रिंसिपल की लीडरशिप स्टाइल सीधे तौर पर हिडन करिकुलम पर असर डालती है।

6. पाठ्यक्रम के निर्धारक

करिकुलम डिज़ाइन कई डिटरमिनेंट्स से प्रभावित होता है। एक पूरी, एग्जाम से जुड़ी चर्चा:

1. दार्शनिक निर्धारक

एजुकेशनल फिलॉसफी बताती है कि क्या सिखाने लायक है, किस तरह के सीखने के अनुभवों पर ज़ोर देना चाहिए, और स्कूलों को किन मूल्यों को बढ़ावा देना चाहिए।

- आदर्शवाद → मूल्य, क्लासिकल ज्ञान
- नेचुरलिज़्म → बच्चों पर केंद्रित अनुभव
- प्रैग्मैटिज़्म → हैंड्स-ऑन एक्टिविटीज़
- कंस्ट्रक्टिविज़्म → इंकायरी और कोलेबोरेशन
- मानवतावाद → व्यक्तिगत विकास, आत्म-साक्षात्कार

NCF 2023 और NEP 2020 कंस्ट्रक्टिविज़्म, ह्यूमनिज़्म, प्रैग्मैटिज़्म और मल्टीडिसिप्लिनरी एजुकेशन के साथ मज़बूती से जुड़े हुए हैं।

2. मनोवैज्ञानिक निर्धारक

करिकुलम इन बातों से जुड़ा होना चाहिए:

- शिक्षार्थी के विकासात्मक चरण,

- संज्ञानात्मक तत्परता,
 - प्रेरणा,
 - सीखने की शैलियाँ,
 - सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतें,
 - विशेष ज़रूरतों।
- पियाजे के स्टेज, वायगोत्स्की का ZPD, ब्रूनर का स्कैफोल्डिंग, और गार्डनर की मल्टीपल इंटेलिजेंस करिकुलम के साइकोलॉजिकल स्ट्रक्चरिंग पर बहुत ज़्यादा असर डालते हैं।

3. समाजशास्त्रीय निर्धारक

करिकुलम समाज के कल्चरल नॉर्म्स, इकोनॉमिक ज़रूरतों, हिस्टोरिकल एक्सपीरियंस और वैल्यूज़ को दिखाता है।

महत्वपूर्ण तत्व:

- नागरिकता और संवैधानिक मूल्य
 - लिंग संवेदनशीलता
 - समावेशन और समानता
 - बहुभाष्यता
 - पर्यावरणीय स्थिरता
 - डिजिटल नागरिकता
 - सामाजिक सामंजस्य
- KVS, एक नेशनल लेवल का इंस्टीट्यूशन होने के नाते, करिकुलम में नेशनल इंटीग्रेशन, मल्टीकल्चरल एक्सपोज़र और कम्युनिटी कोऑर्डिनेशन को शामिल करता है।

4. सांस्कृतिक निर्धारक

करिकुलम में विरासत, कला, भाषा, क्राफ्ट, त्योहार, कहानियाँ और सामूहिक ज्ञान को बनाए रखना चाहिए और साथ ही ग्लोबल नज़रिए को बढ़ावा देना चाहिए।
NEP भारतीय ज्ञान प्रणालियों, स्थानीय संदर्भों, क्षेत्रीय कला, शिल्प, विरासत की सैर और अनुभवात्मक सांस्कृतिक शिक्षा पर जोर देता है।

5. आर्थिक निर्धारक

करिकुलम सीखने वालों को इसके लिए तैयार करता है:

- रोजगार योग्यता,
 - भविष्य के उद्योगों के लिए कौशल,
 - उद्यमिता,
 - व्यावसायिक समझ,
 - आर्थिक भागीदारी।
- इससे वोकेशनल मॉड्यूल, ICT, कोडिंग, फाइनेंशियल लिटरेसी और स्किल-बेस्ड एजुकेशन को शामिल करने का तरीका तय होता है।

6. तकनीकी निर्धारक

डिजिटल टूल्स, ICT रिसोर्स, नई टेक्नोलॉजी (AI, AR/VR), डिजिटल पेडागॉजी, और ब्लेंडेड लर्निंग, करिकुलम प्लानिंग पर बहुत ज़्यादा असर डालते हैं।

करिकुलम को स्टैंडर्ड बनाना होगा:

- डिजिटल साक्षरता,
- सुरक्षित प्रौद्योगिकी उपयोग,
- सूचना प्रबंधन,
- डिजिटल प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग।

7. राजनीतिक और नीति निर्धारक

राष्ट्रीय नीतियाँ, संवैधानिक उम्मीदें, कमीशन और एजुकेशनल एक्ट करिकुलम को आकार देते हैं।

उदाहरण:

- एनईपी 2020
 - एनसीएफ
 - आरटीई अधिनियम
 - परीक्षा सुधार
 - समावेशन और समानता नीतियाँ
- पॉलिटिकल वजहें यह पक्का करती हैं कि करिकुलम नेशनल पहचान, नागरिकता, मूल्यों और इंटरनेशनल कमिटमेंट्स (SDGs) के साथ अलाइन हो।

8. पर्यावरणीय निर्धारक

सस्टेनेबिलिटी एजुकेशन, क्लाइमेट अवेयरनेस, वॉटर कंज़र्वेशन, बायोडायवर्सिटी प्रोटेक्शन, और ग्रीन प्रैक्टिस अब ज़रूरी करिकुलम के हिस्से हैं।

9. संस्थागत निर्धारक

हर स्कूल का इंफ्रास्ट्रक्चर, टीचर की एक्सपर्टाइज़, लीडरशिप कैपेसिटी, कम्युनिटी का माहौल और रिसोर्स इस बात पर असर डालते हैं कि करिकुलम को लोकल ज़रूरतों के हिसाब से कैसे बदला जाना चाहिए। प्रिंसिपल को नेशनल स्टैंडर्ड्स से समझौता किए बिना कॉन्टेक्ट के हिसाब से बदलाव पक्का करना चाहिए।

7. करिकुलम ऑर्गनाइज़ेशन - स्कूलों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पैटर्न

1. विषय-केंद्रित संगठन

पारंपरिक, कंटेंट-हैवी, डिसिप्लिन के हिसाब से बंटा हुआ।

2. शिक्षार्थी-केंद्रित संगठन

सीखने वालों की ज़रूरतों, रुचियों, डेवलपमेंट की प्रगति पर ध्यान देता है।

3. गतिविधि-आधारित संगठन

प्रैक्टिकल एक्टिविटीज़, लैब वर्क, प्रोजेक्ट्स, फील्ड एक्सपीरियंस।

4. एकीकृत / अंतःविषय संगठन

कई विषयों (पर्यावरण, स्वास्थ्य, सामुदायिक जीवन) को जोड़ने वाली थीम।

5. सर्पिल संगठन

मुश्किल लेवल पर कॉन्सेप्ट्स पर दोबारा विचार किया गया।

6. मॉड्यूलर संगठन

छोटी, सेल्फ-कंटेन्ड यूनिट्स; फ्लेक्सिबिलिटी और डिफरेंशिएशन देती हैं। प्रिंसिपल को हर सब्जेक्ट स्टेज के लिए सही ऑर्गनाइज़ेशन चुनना होगा।

8. करिकुलम लागू करना - प्रिंसिपल की मुख्य ज़िम्मेदारी

करिकुलम इम्प्लीमेंटेशन का मतलब है करिकुलम के इरादों को क्लासरूम की असलियत में बदलना।

प्रिंसिपल के लिए, इसका मतलब है:

- **वार्षिक पाठ्यक्रम योजना** तैयार करना
- समय-सारणी और संसाधन आवंटन का समन्वय
- ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज संरक्षण सुनिश्चित करना
- पाठ योजना का पर्यवेक्षण
- शिक्षकों के लिए क्षमता-निर्माण की योजना बनाना
- कक्षा अवलोकन के माध्यम से निगरानी
- अकादमिक समीक्षा बैठकें आयोजित करना
- FLN और ECCE निष्ठा सुनिश्चित करना
- CBE (योग्यता-आधारित शिक्षा) को एकीकृत करना
- मूल्यांकन-पाठ्यक्रम संरक्षण सुनिश्चित करना
- क्वालिटी ऑडिट के लिए डॉक्यूमेंटेशन बनाए रखना

इम्प्लीमेंटेशन सबसे ज़रूरी काम है क्योंकि करिकुलम की सफलता डिज़ाइन से नहीं बल्कि क्लासरूम-लेवल पर लागू करने से मापी जाती है।

9. पाठ्यक्रम मूल्यांकन

इवैल्यूएशन यह पक्का करता है कि करिकुलम ने अपने चाहे गए लक्ष्य हासिल किए हैं या नहीं।

एक प्रिंसिपल लीड करता है:

- शिक्षार्थी परिणाम विश्लेषण,
 - प्रश्न पत्र विश्लेषण,
 - शिक्षक प्रतिक्रिया,
 - छात्र प्रतिक्रिया,
 - संसाधन दक्षता अध्ययन,
 - और हासिल किए गए करिकुलम के बीच अलाइनमेंट चेक ,
 - सह-शैक्षणिक कार्यान्वयन का ऑडिट,
 - सुधारात्मक योजना।
- मूल्यांकन करिकुलम में बदलाव और स्कूल सुधार का आधार बनता है।

10. करिकुलम लीडरशिप में KVS प्रिंसिपल की भूमिका प्रिंसिपल को यह दिखाना होगा:

1. **विज्ञानिग**
नेशनल करिकुलम के लक्ष्यों को स्कूल के तरीकों में बदलना।
2. **शैक्षणिक योजना**
सालाना और महीने के करिकुलम प्लान, कॉम्पिटेन्सी के हिसाब से।
3. **क्षमता निर्माण**
टीचर्स को पेडागॉजी, डिजिटल टूल्स और असेसमेंट पर ट्रेनिंग देना।
4. **निगरानी और पर्यवेक्षण**
रेगुलर ऑब्ज़र्वेशन, फ्रीडबैक साइकिल, प्रोफेशनल सपोर्ट।
5. **डेटा-ड्रिवन डिजीजन मेकिंग**
स्ट्रेटेजी बदलने के लिए असेसमेंट और अटेंडेंस डेटा का इस्तेमाल करना।
6. **सामुदायिक समन्वय**
लोकल जानकारी, माता-पिता और कम्युनिटी रिसोर्स का इस्तेमाल करना।
7. **नवाचार को बढ़ावा देना**
क्रिएटिव पेडागॉजी, ब्लेंडेड लर्निंग, इंटरडिसिप्लिनरी कामों को बढ़ावा देना।

ओवरट करिकुलम: मतलब, कंस्ट्रक्शन और इम्प्लीमेंटेशन

1. ओवरट करिकुलम का मतलब (फॉर्मल / एक्सप्लिसिट करिकुलम)

ओवरट करिकुलम का मतलब है ऑफिशियल, लिखा हुआ, पब्लिक में डॉक्यूमेंटेड और जानबूझकर डिज़ाइन किया गया करिकुलम जिसे कोई स्कूल या एजुकेशन सिस्टम फॉर्मली अपनाता और लागू करता है। यह दिखने वाला, तय, ऑथराइज़्ड एकेडमिक रोडमैप है जो साफ-साफ बताता है कि क्या पढ़ाया जाना चाहिए, कैसे पढ़ाया जाना चाहिए, और लर्निंग को कैसे असेस किया जाएगा।

इसे अक्सर इस तरह दिखाया जाता है:

- एनसीएफ/राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा
- विषय-विशिष्ट पाठ्यक्रम दस्तावेज़
- कक्षा-वार पाठ्यक्रम
- पाठ्यपुस्तकें और शिक्षक पुस्तिकाएँ
- मूल्यांकन दिशानिर्देश
- शैक्षणिक और नियोजन टेम्पलेट
- नीति दस्तावेज़ और परिपत्र
- स्कूल शैक्षणिक योजना / शैक्षणिक कैलेंडर

आसान शब्दों में कहें तो: ओवरट करिकुलम वह सब कुछ है जो ऑफिशियली स्टूडेंट लर्निंग के लिए बनाया गया है - एजुकेशनल इरादों का ब्लूप्रिंट। यह टीचर्स के रोज़ाना क्लासरूम के फैसलों, प्रिंसिपल के मॉनिटरिंग एक्शन और स्कूल के ओवरऑल एकेडमिक विज़न को गाइड करता है।

2. ओवरट करिकुलम की विशेषताएं

a) यह निर्धारित और मानकीकृत है

यह आधिकारिक है और सिस्टम के सभी स्कूलों में समान रूप से लागू होता है (उदाहरण के लिए, केवीएस सभी केंद्रीय विद्यालयों के लिए पाठ्यक्रम का उपयोग करता है) विद्यालय)।

b) यह डॉक्यूमेंटेड और पब्लिक है

हिडन करिकुलम के उलट, ओवरट करिकुलम ऑफिशियली पब्लिश होता है और टीचर, स्टूडेंट, पेरेंट्स और इवैल्यूएटर के साथ शेयर किया जाता है।

c) यह मानक है

यह ज़रूरी ज्ञान, स्किल्स, वैल्यूज़, काबिलियत और व्यवहार के बारे में नियम तय करता है।

d) यह राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुरूप है

यह संवैधानिक मूल्यों, NEP 2020 के सिद्धांतों, SDGs, सांस्कृतिक विरासत, कई भाषाओं के बारे में जागरूकता, जेंडर के बारे में जागरूकता और पूरी शिक्षा के लक्ष्यों को दिखाता है।

e) **यह योग्यता-उन्मुख है**

मॉडर्न ओवरट करिकुलम (NEP के बाद) कॉम्पिटेंसी, लर्निंग आउटकम, 21वीं सदी के स्किल्स और असल ज़िंदगी में इस्तेमाल पर जोर देता है।

f) **यह सभी मूल्यांकन का मार्गदर्शन करता है**

बोर्ड एग्जाम, इंटरनल असेसमेंट, कॉम्पिटेंसी टेस्ट और स्कूल-बेस्ड असेसमेंट का ब्लूप्रिंट खुले करिकुलम से लिया जाता है।

3. **ओवरट करिकुलम के कंपोनेंट्स**

एक प्रिंसिपल को एकेडमिक प्रोसेस को अच्छे से मैनेज करने के लिए हर पहलू को पूरी तरह समझना चाहिए।

1. **उद्देश्य और लक्ष्य**

यह बताता है कि स्टूडेंट्स से क्या हासिल करने की उम्मीद की जाती है (कॉग्निटिव, अफेक्टिव, साइकोमोटर डोमेन)। ये NEP 2020 जैसे नेशनल पॉलिसी के लक्ष्यों से आते हैं:

- आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
- समग्र विकास
- 21वीं सदी के कौशल
- नागरिकता और संवैधानिक मूल्य
- अनुभवात्मक शिक्षा
- बहुभाषी प्रवीणता

2. **कंटेंट फ्रेमवर्क**

इसमें अलग-अलग ग्रेड के टॉपिक की डिटेल्ड लिस्ट, सब-टॉपिक, थीम और कॉन्सेप्चुअल प्रोग्रेशन शामिल हैं।

- ऊर्ध्वाधर प्रगति (सरल → जटिल)
- क्षैतिज संरक्षण (पाठ्यक्रम-पार लिंक)
- कॉन्सेप्चुअल फ्लो (ज़रूरी शर्तें → एप्लीकेशन)

3. **शैक्षणिक दिशानिर्देश**

इनमें बताया गया है कि पढ़ाना कैसे होना चाहिए:

- अनुभवात्मक शिक्षा
- गतिविधि-आधारित रणनीतियाँ
- पूछताछ-आधारित दृष्टिकोण
- सहयोगात्मक शिक्षण
- रचनावादी प्रथाएँ
- आयु-उपयुक्त ECCE शिक्षणशास्त्र
- एफएलएन शिक्षण-अधिगम मार्ग
- कला, खेल, आईसीटी का एकीकरण

4. **मूल्यांकन ढांचा**

यह बताता है कि लर्निंग का मूल्यांकन कैसे और कैसे किया जाएगा:

- योग्यता-आधारित मूल्यांकन
- रचनात्मक मूल्यांकन संरचना
- सारांश परीक्षा खाका
- परफॉर्मेंस टास्क, रूब्रिक्स, पोर्टफोलियो
- उपचारात्मक और संवर्धन संबंधी दिशानिर्देश

5. **सीखने के संसाधन**

यह बताता है कि कौन सी टेक्स्टबुक, रेफरेंस मटीरियल, मैनिपुलेटिव्स, लैब्स, डिजिटल टूल्स और प्लेटफॉर्म (DIKSHA, ePathshala, PM eVIDYA) रिकमेंडेड हैं।

6. **समय आवंटन**

हर हफ्ते, हर सप्ताह, हर यूनिट के लिए सुझाए गए पढ़ाने के घंटे बताता है, जिससे प्रिंसिपल सही टाइम-टेबल बना सकें।

7. **को-स्कॉलैस्टिक और एक्सपीरिएंशियल एरिया**

इसमें आर्ट्स एजुकेशन, फिजिकल एजुकेशन, हेल्थ और वेलनेस, वर्क एजुकेशन, क्लब, SUPW, कम्युनिटी एंगेजमेंट शामिल हैं - सभी फॉर्मली प्लान किए गए हैं।

4. **प्रत्यक्ष पाठ्यक्रम का निर्माण**

एक साफ़ करिकुलम बनाना एक साइंटिफिक तरीके से बना, कई लेयर वाला प्रोसेस है। प्रिंसिपल को इन स्टेज को समझना चाहिए क्योंकि वे अक्सर स्कूल लेवल पर इसके अडैप्टेशन को सुपरवाइज़ करते हैं।

स्टेज 1: ज़रूरतों का एनालिसिस और कॉन्टेक्सचुअल स्टडी

करिकुलम डिज़ाइनर जांच करते हैं:

- राष्ट्रीय शैक्षिक उद्देश्य,
- शिक्षार्थियों की विकासात्मक ज़रूरतें,
- सामाजिक अपेक्षाएँ,
- वैश्विक रुझान,
- सांस्कृतिक प्राथमिकताएँ,
- तकनीकी संदर्भ।

स्कूल लेवल पर बदलाव करते समय, प्रिंसिपल को लोकल ज़रूरतों (जैसे, KVs में भाषा की अलग-अलग भाषा, ट्रांसफर वाले परिवार, मिले-जुले सोशियो-इकोनॉमिक बैकग्राउंड) को एनालाइज़ करना चाहिए।

स्टेज 2: लक्ष्य और सीखने के नतीजे तय करें

करिकुलम बनाने वाले पहचानते हैं:

- डोमेन-विशिष्ट दक्षताएँ,
- विषय-संबंधित कौशल,
- ग्रेड-वाइज़ बेंचमार्क।

कॉम्पिटेंसी स्टेटमेंट टेक्स्टबुक, पेडागॉजी और असेसमेंट की रीढ़ बन जाते हैं।

स्टेज 3: कंटेंट चुनें और उसे क्रम में रखें

सब्जेक्ट एक्सपर्ट कंटेंट हायरार्की तय करते हैं:

- मूलभूत अवधारणाएँ पहले
- तार्किक प्रगति
- मुख्य विचारों का सर्पिल पुनरीक्षण
- पूर्व ज्ञान के साथ एकीकरण
- अंतर-विषयक लिंक

ग्रेड-वाइज़ और स्टेज-वाइज़ सीकेंसिंग कंटिन्यूटी पक्का करती है।

स्टेज 4: सीखने के अनुभव डिज़ाइन करें

पेडागॉजी को इस तरह बताया गया है:

- अनुशासित शिक्षण विधियाँ,
- परियोजना-आधारित कार्य,
- गतिविधियाँ,
- प्रयोग,
- क्षेत्र का दौरा,
- डिजिटल जुड़ाव।

इससे यह पक्का होता है कि टीचर कंस्ट्रक्टिविस्ट, एक्टिव, मीनिंगफुल एंगेजमेंट मॉडल को फॉलो करें।

चरण 5: मूल्यांकन डिज़ाइन

असेसमेंट स्ट्रक्चर कॉम्पिटेंसी के साथ अलाइन होता है:

- प्रारंभिक मूल्यांकन (एफए)
- सारांश मूल्यांकन (एसए)
- रूब्रिक्स और प्रदर्शन कार्य
- एफएलएन के लिए मौखिक मूल्यांकन
- प्रैक्टिकल / प्रयोगशालाएँ
- ईसीसीई में अवलोकन चेकलिस्ट
- विभागों

इस तरह, स्टूडेंट्स को आइसोलेटेड टेस्टिंग के बजाय इंटीग्रेटेड असेसमेंट का अनुभव होता है।

चरण 6: संसाधन पहचान

पाठ्यक्रम में बताया गया है:

- पाठ्यपुस्तकें
- डिजिटल सामग्री
- सीखने की किट
- जोड़-तोड़
- टीएलएम
- सामुदायिक संसाधन
- कम लागत वाली सामग्री

प्रिंसिपल को उपलब्धता और सही इस्तेमाल पक्का करना होगा।

स्टेज 7: करिकुलम वैलिडेशन और रिव्यू

एक्सपर्ट कमेटियां इन आधारों पर करिकुलम का पायलट, रिव्यू और बदलाव करती हैं:

- शिक्षक प्रतिक्रिया
- छात्र प्रदर्शन
- क्षेत्र की वास्तविकताएँ
- नीति अद्यतन
- एनईपी सिफारिशें
- तकनीकी परिवर्तन

KVS प्रिंसिपल को हर साल अपने स्कूल के करिकुलम अडैप्टेशन का रिव्यू करना होगा।

5. ओवरट करिकुलम का इम्प्लीमेंटेशन (स्कूल-लेवल ऑपरेशनलाइजेशन)

प्रिंसिपल के लिए, इम्प्लीमेंटेशन सबसे ज़रूरी काम है क्योंकि करिकुलम की क्वालिटी क्लासरूम लेवल पर मापी जाती है, डॉक्यूमेंट्स में नहीं।

इम्प्लीमेंटेशन में शामिल हैं:

1. स्कूल-स्तरीय व्याख्या

प्रिंसिपल स्कूल की ज़रूरतों के हिसाब से करिकुलम को समझने, समझने और उसे सही संदर्भ में रखने के लिए एकेडमिक टीम की मीटिंग को लीड करते हैं।

इसमें कॉम्पिटेंसी की मैपिंग, फोकस एरिया की पहचान करना और क्रॉस-करिकुलर इंटीग्रेशन की प्लानिंग करना शामिल है।

2. एनुअल करिकुलम प्लान (ACP) तैयार करना

ACP में शामिल हैं:

- अवधि-वार विभाजन
 - इकाई वितरण
 - मूल्यांकन खिड़कियाँ
 - शैक्षणिक कार्यक्रम
 - परियोजना अवधि
 - सह-पाठ्यचर्या समय-निर्धारण
- यह एकेडमिक रोडमैप बन जाता है।

3. टाइम-टेबल तैयार करना

टाइम-टेबल करिकुलम के घंटों को हफ्ते और रोज़ के साइकल में चलाता है, जिससे यह पक्का होता है:

- पर्याप्त विषय अवधि
- प्रयोगशाला अवधि
- कला और खेल अवधि
- पुस्तकालय का समय
- उपचारात्मक और संवर्धन स्लॉट
- समावेशी शिक्षा अवधि
- संरचित आधारभूत शिक्षण ब्लॉक

टाइम-टेबल का पक्का होना करिकुलम का पक्का होना पक्का करता है।

4. टीचर की तैयारी सुनिश्चित करना

टीचर्स को ये पढ़ना चाहिए:

- पाठ्यक्रम दस्तावेज़,
- पाठ्यपुस्तक मानचित्रण,
- मूल्यांकन दिशानिर्देश,
- शैक्षणिक सिफारिशें।

प्रिंसिपल ऑर्गनाइज़ करते हैं:

- अभिविन्यास कार्यक्रम
- क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ
- सहयोगात्मक योजना बैठकें
- सहकर्मी शिक्षण समूह

5. पाठ योजना और इकाई योजना

टीचर्स करिकुलम की उम्मीदों को स्ट्रक्चर्ड प्लान में बदलते हैं:

- सीखने के परिणाम